



परमेश्वर के वचन को प्रदान करना

Imparting God's Word

उद्देश्य (OBJECTIVE)

यह प्रशिक्षण हमें यह सिखाता है कि कैसे हम न केवल परमेश्वर के वचन को स्वयं समझें, बल्कि उसे **दूसरों तक प्रभावी रूप से साझा** करें।

वचन को केवल उपदेश देने के लिए नहीं, बल्कि **जीवन को बदलने और नेतृत्व को सशक्त बनाने** के लिए दिया गया है।

यह प्रशिक्षण इस पर बल देता है कि वचन कैसे लोगों को प्रशिक्षित, उत्साहित, और खड़ा कर सकता है।

सारांश (OVERVIEW)

- परमेश्वर का वचन जीवन में **बदलाव लाने की शक्ति** रखता है
- हम वचन को केवल “सिखाएं” नहीं, बल्कि **प्रदान करें** — ताकि लोग उसे अपनाएं
- प्रभावी रूप से वचन देने के लिए ज़रूरी हैं:
 1. **स्पष्टता (Clarity)**: बाइबल की सच्चाई को स्पष्ट रूप से समझाना
 2. **संदर्भ (Context)**: श्रोताओं की परिस्थिति को ध्यान में रखना
 3. **पुनरावृत्ति (Repetition)**: मुख्य बातें बार-बार दोहराना
 4. **व्यवहारिकता (Application)**: वचन को जीवन में कैसे लागू करें, यह दिखाना
- आत्मिक अगुवों को वचन के द्वारा लोगों को **खड़ा करना, संतुलित करना, और प्रेरित करना** है
- वचन देने का उद्देश्य है: **रूपांतरण**, न केवल सूचना

संदर्भित बाइबल वचन (VERSES REFERENCED)

- 2 तीमुथियुस 3:16-17
 - यशायाह 55:11
 - इब्रानियों 4:12
 - मत्ती 13:1-23
-

अध्ययन के लिए प्रश्न (QUESTIONS FOR FURTHER STUDY)

1. आप कैसे सुनिश्चित करते हैं कि आप जो वचन साझा करते हैं वह केवल ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन बदलने वाला हो?

2. क्या आप लोगों की स्थिति और संदर्भ को ध्यान में रखते हुए सिखाते हैं?

3. क्या आप अपने सिखाए गए वचन की **प्रभावशीलता** को मापते हैं? कैसे?

4. आप किस प्रकार दूसरों को भी परमेश्वर के वचन को **प्रदान करने** के लिए तैयार कर सकते हैं?

अधिक अध्ययन के लिए वचन पद (SCRIPTURE FOR FURTHER STUDY)

- 1 थिस्सलुनीकियों 2:13
- प्रेरितों के काम 17:11
- यशायाह 50:4